

**इलाहाबाद उच्च न्यायालय****लखनऊ****आपराधिक विविध जमानत आवेदन सं०.- 4324 वर्ष 2026**

रानी

.....प्रार्थी(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य प्रमुख सचिव गृह लखनऊ के माध्यम से

.....प्रतिवादी (गण)

प्रार्थी (गण) के अधिवक्ता : दिलीप कुमार तिवारीप्रतिवादी (गण) के अधिवक्ता : शा. अधि.

न्यायालय सं०. - 11**माननीय न्यायमूर्ति, राजीव सिंह**

1. प्रार्थिनी के विद्वान अधिवक्ता और राज्य की ओर से विद्वान एजीए को सुमैंने और रिकॉर्ड का अवलोकन किया।
2. यह जमानत याचिका प्रार्थिनी की ओर से मुकदमा अपराध सं०. 42 वर्ष 2024, अंतर्गत धारा 452, 323, 504, 506, 307, 308, 325, 326, 34 भा.द.सं., थाना गौरीगंज, जिला अमेठी में, उन्हें जमानत पर रिहा करने की प्रार्थना के साथ दायर की गई है।
3. प्रार्थिनी के अधिवक्ता प्रस्तुत करते हैं कि प्रार्थिनी निर्दोष है और वह 8.5.2026 से कारावास में निरुद्ध है। वह आगे यह भी प्रस्तुत करते हैं कि सह-

अभियुक्त हीरा लाल मौर्य, अमित मौर्य और अशोक कुमार मौर्य, जिनकी भूमिका

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।

समान है, को इस न्यायालय द्वारा पहले ही जमानत दी जा चुकी है, जो क्रमशः आपराधिक विविध जमानत आवेदन सं०. 7847 वर्ष 2024, 3476 वर्ष 2025 और 10533 वर्ष 2025 में पारित आदेश दिनांकित 20.3.2025, 25.4.2025 और 20.2.2026 के माध्यम से दी गई है (जमानत आदेश जमानत आवेदन के संलग्नक सं०. 8 के रूप में संलग्न हैं)। ऐसी परिस्थितियों में, याचिकाकर्ता भी जमानत पाने की अधिकारी है। जमानत पर रिहा होने पर, वह इसका दुरुपयोग नहीं करेगी।

4. विद्वान एजीए ने प्रार्थिनी की जमानत की प्रार्थना का विरोध किया, लेकिन उन्होंने इस तथ्य को स्वीकार किया कि सह-अभियुक्त, हीरा लाल मौर्य, अमित मौर्य और अशोक कुमार मौर्य को इस न्यायालय द्वारा पहले ही जमानत दी जा चुकी है।

5. पक्षकारों के विद्वान अधिवक्ताओं के तर्कों, पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य, प्रथम सूचना रिपोर्ट की विषय-वस्तु, व अन्य सुसंगत दस्तावेजों, सह-आरोपी हीरा लाल मौर्य, अमित मौर्य, अशोक कुमार मौर्य का जमानत आदेश, समानता के आधार पर और साथ ही तथ्य और परिस्थितियों की समग्रता के आधार, को दृष्टिगत रखते हुए, मेरा विचार है कि प्रार्थिनी जमानत पर रिहा होने की अधिकारी है।

6. प्रार्थिनी रानी को उक्त मुकदमा अपराध में, संबंधित न्यायालय की संतुष्टि अनुसार उतनी ही राशि का व्यक्तिगत मुचलका और दो जमानतदार प्रस्तुत करने पर, निम्नलिखित शर्तों के साथ जमानत पर रिहा किया जाए:-

- i. प्रार्थिनी उस अपराध के समान कोई अपराध नहीं करेगी या उसमें भाग नहीं लेगी जिसका उस पर आरोप है, या संदिग्ध है, उस अपराध के लिए जिसके किए जाने का उस पर संदेह है।
- ii. प्रार्थिनी मामले के तथ्यों से परिचित किसी भी व्यक्ति को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कोई प्रलोभन, धमकी या वादा नहीं करेगी, जिससे कि वह ऐसे तथ्यों को न्यायालय अथवा किसी पुलिस अधिकारी के समक्ष प्रकट करने से विरत हो सके अथवा साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ कर सके।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।

- iii. प्रार्थिनी को यह शपथ-पत्र देना होगा कि साक्ष्य के लिए नियत तारीख पर गवाह अदालत में उपस्थित हों वह स्थगन की मांग नहीं करेगी। प्रार्थिनी दौरान विचारण अभियोजन पक्ष का सहयोग करेगी। इस शर्त के उल्लंघन की स्थिति में, विचारण न्यायालय के पास इसे ज़मानत की स्वतंत्रता का दुरुपयोग मानने और कानून के अनुसार आदेश पारित करने का अधिकार होगा।
- iv. प्रार्थिनी को निर्धारित प्रत्येक तिथि पर विचारण न्यायालय में व्यक्तिगत रूप से या अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित रहना होगा। यदि वह पर्याप्त कारण के बिना, अनुपस्थित रहती है, तो विचारण न्यायालय अंतर्गत धारा 229-अ भा.द.सं./अंतर्गत धारा 269 बीएनएस में उसके खिलाफ कार्यवाही कर सकती है।
- v. यदि, प्रार्थिनी मुकदमे के दौरान जमानत का दुरुपयोग करती है तो उसकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए अंतर्गत धारा 82 द.प्र.सं./ अंतर्गत धारा 84 बीएनएस में उद्घोषणा जारी की जा सकती है और यदि प्रार्थिनी ऐसी उद्घोषणा में नियत तारीख को न्यायालय के समक्ष उपस्थित होने में विफल रहती है, तब, विचारण न्यायालय उसके विरुद्ध, अंतर्गत धारा 174-अ भा.द.सं./ अंतर्गत धारा 209 बीएनएस में, विधि के प्रावधानों के अनुसार, कार्यवाही शुरू करेगा।
- vi. प्रार्थिनी को तय तिथियों पर विचारण न्यायालय के सामने (i) मुकदमे की शुरुवात में, (ii) आरोप तय करते समय (iii) धारा 313 द.प्र.सं. के अंतर्गत बयान दर्ज करते समय, स्वयं मौजूद रहना होगा। यदि विचारण न्यायालय के विचार में, प्रार्थिनी की अनुपस्थिति जानबूझकर या बिना किसी पर्याप्त कारण के है, तो विचारण न्यायालय के लिए यह खुला होगा कि वह ऐसे चूक को ज़मानत की आज़ादी का दुरुपयोग मानेगा और उसके खिलाफ विधि के अनुसार कार्यवाही करेगा।

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।



7. शर्तों का पालन न करने की स्थिति में, यह ज़मानत को निरस्त करने का आधार होगा।

(राजीव सिंह, न्यायमूर्ति)

जून 10, 2026

गौरव/-

Translated Version. Not for Legal Use.

अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।